

- gracious* : किं न ददाति भगवान् प्रसन्नः, Ve. ; (2) वितरति (तृ, c. 1.), *God, g. me whatever is good* : तन्मे भद्रं मद्रं वितर भगवन्, Ma. i. 4. ; *to whom excessive powers had been g. ed* : वितीर्णवीर्यातिशयान्, Si. i. 71. Ph. : *to g. a request* : प्रार्थितं or कामं ददाति, v. p. or अभिलाषं पूरयति. II. To concede : (1) स्वीकरोति (=to admit : q.v.) ; (2) by अथ or अथो (=g. ed), *g. ed the arrow was discharged by him for me* : अथो शरस्तेन मर्दध-मुज्झितः, Ki. xiv. 17. ; (3) by imper., *I g. he is wholly so* : तथाविधस्तावदशेषमस्तु सः, Ku.
- GRANTEE : (1) दानग्रहीतृ (f. त्री) ; (2) प्रतिग्रहीतृ (f. त्री), He.
- GRANTOR : (1) दानकर्तृ (f. त्री) ; (2) दातृ (f. त्री) : v. Giver.
- GRANULAR : (1) कणमयः (यी, यं) (?) ; (2) कणपूर्ण (f. पूर्णा) (?).
- GRAPE : द्राक्षा, *mountain-g.* : पर्वतजा द्राक्षा ; *g. without stone or seedless g.* : अवीजा द्राक्षा ; *large g.* : गोस्तनी द्राक्षा, Bha. N.B. These words are often applied to *raisins*, Bha. : for distinction, add आमा or पक्का.
- GRAPHIC, -AL : (1) विचित्रः (त्रा, त्रं) (=picturesque) ; (2) सुस्पष्टः (ष्टा, ष्ट') (=very clear) ; (3) अर्थवत् (f. ती) (=significant).
- GRAPHICALLY : expr. by adj.
- GRAPNEL : I. Properly : चुद्रलङ्करः. II. In gen : आकर्षणी (?).
- GRAPPLE (v.) : I. Lit. : गृह्णाति (ग्रह्, c. 9.), *g. ed the arms of Śiva* : शिवस्य भुजद्वयं जग्राह, M.n. : v. To seize. II. To comprehend : q.v. : गृह्णाति.
- GRAPPLE, GRAPPLING (subs.) : I. Seizure : q.v. : ग्रहणम्. II. A hook : आकर्षणी (?).
- GRAPPLING-IRONS : लौहाकर्षणी (?).
- GRAPY : I. Lit. : by comp. II. Like grape : द्राक्षामः (मा, मं).
- GRASP (v.) : I. To catch : q.v. : गृह्णाति (ग्रह्, c. 9.). II. To comprehend : q.v. : गृह्णाति. *G. at* : i.e. aspire to : q.v. : ईप्सति (desi. of आप्).
- GRASP (subs.) : I. Lit. : ग्रहः, -णम्, *he has fallen in my g.* : सोऽयं महुजपञ्जरे निपतितः, Ve. iii. ; *embraced with a firm g.* : निष्पिपेष परिरम्य वक्षसा, Ki. xviii. 13. : *by their g. ing of each other* : तयोर्भुजविनिष्पेषात्, Mah. iii. 39. 60. II. Mental : v. Capacity, comprehension.
- GRASPING (adj.) : गृध्रु (mf. n.) : v. Covetous.
- GRASPINGLY : expr. by adj., *un-g.* : अगृध्रुः, R. : v. Also covetously.
- GRASPINGNESS : गृध्रुता : v. Covetousness.
- GRASS : तृणम्. *Young g.* : (1) बालतृणम् ; (2) शष्पम् ; (3) शादः. *Meadow g.* : (1) घासः ; (2) यवसः. *The 'Sacrificial g.'* : (1) कुश (mn.) ; (2) दर्भः. *The Dūrvā g.* : दुर्वा.
- GRASS-GREEN : (1) शादलः (ला, लं) ; (2) शाद-हरितः (ता, तं) ; (3) नवतृण (f. णा), Ki. x. 33.
- GRASSHOPPER : (1) शलमः ; (2) पतङ्गः.
- GRASSY : I. Lit. : (1) बहुतृण (f. णा) ; (2) तृणावृतः (ता, तं) ; and sim. comp.s. II. Green : q.v.
- GRATE (subs.) : no equiv. : *लौहयोगः. लौहचुली might be used for g. =fireplace.
- GRATE (v.) : I. To furnish with g.s : *लौह-योगान्वितं (f. तां) करोति ; लौहदण्डैः ढ्ढीकरोति. II. To rub : q.v. : घर्षति (घृष्, c. 1.). III. To vex, irritate : q.v.
- GRATEFUL : I. Pleasant : q.v. : रम्य (f. म्या). II. Thankful : (1) कृतज्ञ (f. ज्ञा) ; (2) कृतवेदिन् (f. नी), *and who is not g.* : यश्च कृतं न वेत्ति, H.
- GRATEFULLY : I. Pleasantly : q.v. II. Thank-fully : कृतज्ञतया.
- GRATEFULNESS : I. Gratitude : q.v. II. Pleasantness : q.v. : रम्यता.
- GRATER : घर्षणी (?), घर्षणयन्त्रम् (?).
- GRATIFICATION : I. The act : (1) तोषणम्, सं-परि- ; (2) तर्पणम्, परि-, (rare). II. Pleasure, delight : q.v. : (1) सन्तोषः ; (2) परितोषः ; (3) तुष्टिः ; *receiving g. at night* : तुष्टिमुपेयुषां निशि, N. xvi. iii. III. Reward : q.v. : पारितोषिकम्.
- GRATIFY : तोषयति, सं-, परि-, (c. of तुष्), *you will g. him and return quick* : तं सन्तोष्य सत्वरमागमिष्यसि, H. ; *the killer of Vritra was g. ed with his excessive strength* : तुतोष वीर्यातिशयेन वृत्रहा, R. iii. 62. : v. To please, satisfy.